पिट्स

आर.एन.आई. ३८१३९/८१

www.pits.co.in

वर्ष २९ अंक-३३ सोमवार, ६ अप्रैल २००९ पृष्ठ १६ मूल्य दो रुपये इंदौर,मुंबई से एक साथ प्रकाशित

सब सोनिया के प्रशंसक

चुनावी महासंग्राम के दौर में यूपीए के जितने भी घटक दल कांग्रेस को अलविदा कह कर जा रहे है चाहे वे तमाम कांग्रेसी नेताओं की गरिया लें पर सोनिया की तारीफ में वे कसीदा पढ़ना नहीं भूलते, चाहे लालू हो, सोरेन या पासवान या अमर-मुलायम की जोड़ी माकपा हो या फिर पीएमके सब ने समवेत स्वरों में सोनिया की तारीफ की है। कांग्रेस रणनीतिकारों को भरोसा है कि सोनिया यूपीए के पक्ष में चुंबक का काम करेंगी, जो आज जा रहे हैं, चुनाव बाद में सोनिया गांधी के कहने पर ही फिर लौटकर कांग्रेस के साथ आएंगे और नया यूपीए बनाएंगे।

कितनी होगी कीमत...?

अब तक की जानकारी के अनुसार आईबीएम से छंटनी के दौरान निकाले गए व्यक्ति ने तबाही मचा दी। न्यूयार्क के बिंघम्प्टन इलाके की एक इमारत में शुक्रवार को इस बंदूकधारी ने करीब 41 लोगों को बंधक बना लिया। इस फायरिंग में 13 लोग मारे गए। इसके बाद पता चला कि यह भी मंदी की ही मार है। आईबीएम जैसी बड़ी आईटी कंपनी में काम करने वाले इस व्यक्ति को निश्चित ही लाखों का पैकेज मिलता रहा होगा। अर्श से एकदम

✍ उत्तम झंवर

फर्श। ज्यादातर लोगों का हाल कुछ ऐसा ही है। एशियाई मूल के लोगों पर अंधाधुध गोलियां चलाने के बाद उसे कुछ डॉलर्स मिले होगें। शायद अगले दस साल तक उसके परिवार को मंदी से लड़ने की जरूरत न पड़े। ऐसी भी कुछ खबर है कि 20 से 22 साल के युवक उसके साथ थे। युवा पथभ्रष्ट हो चले हैं। दरअसल बाजार इसके लिए सबसे ज्यादा जिम्मेदार है। रंगीन सपने देखते हुए बर्गर और कोक की बोतल के साथ बढ़ते बचपन को अब आरामतलब जवानी चाहिए। वो दौर नहीं रहा कि संघर्ष कर खुद को स्थापित किया जाए। अब सपने होते हैं तुरंत अमीर बनने के। लंबी गाड़ी, ब्रांडेड कपड़े, मंहगा मोबाइल और फाइव स्टार होटल में चाय-नाश्ता और जेब भर के डॉलर। इन सपनों को आम आदमी आसानी से पूरा नहीं कर सकता। इसके लिए बीस साल का संघर्ष या फिर अंतरात्मा का कत्ल जरूरी है। किसी को मारने से पहले अपनी अंतरात्मा को मारने के लिए जाने इन लोगों को कितने डॉलर मिलते होंगे? खून से सने ये हाथ जाने कैसे अपने परिवार में किसी बुर्जुग को दवा दे पाते होंगे या किसी बच्चे को रोटी खिला पाते होंगे?

सवाल ये भी है कि आर्थिक स्थितियों को जल्द सुदृढ़ न करने की स्थिति में जाने कितने पढ़े-लिखे लोग पथभ्रष्ट हो जाएंगे?

कौन प्रधानमंत्री - किसकी सरकार

नए गठबंधन के आसार

(रामस्वरूप मंत्री)

पंद्रहवी लोकसभा चुनाव के लिये प्रत्याशियों और दलों ने मैदान भले ही संभाल लिया है मगर अगली सरकार किसकी होगी और कौन प्रधानमंत्री बनेगा इसका कयास विशेषज्ञ तो क्या धुरंधर राजनेता भी लगाने में असमर्थ हैं. कहने को कांग्रेस के नेतृत्व में यूपीए और भाजपा के नेतृत्व में एनडीए जोर आजमाइश कर रहा है. मगर वामदलों और अन्यों का तीसरा मोर्चा एवं लालू -मुलायम -पासवान के चौथे मोर्चे ने सारे समीकरण गड्ड-मड्ड कर दिये हैं. इन बिगड़ते समीकरणों ने भाजपा और कांग्रेस को भी इस हकीकत को स्वीकार करने पर मजबूर कर दिया है कि अगली सरकार का फैसला चुनाव नतीजों के बाद नये गठबंधन का कारण बनेंगे.

सरकार बनाने के लिये संप्रग और राजग दोनों ही चुनाव बाद के गठबंधन को लेकर ही कसरत कर रहे हैं. जनता की चुप्पी सरकार की संभावना को लेकर दावे-प्रतिदावे को और कमजोर कर दिया है. भाजपा की वरिष्ठ नेता सुषमा स्वराज और कांग्रेस के वरिष्ठ नेता आनंद शर्मा ने तो इस बात को खुले रूप से स्वीकार कर लिया है कि उनके दल या मोर्चे में बहुमत प्राप्त करने की कूबत नहीं है और सरकार बनाने के लिये वे नतीजे आने के बाद नया गठबंधन बनायेंगे.

भाजपा की वरिष्ठ नेता और विदिशा सीट से पार्टी की उम्मीदवार सुषमा स्वराज के बयान से लालकृष्ण आडवाणी के प्रधानमंत्री बनने के सपने को धक्का लग सकता है. सुषमा ने कहा कि हो सकता है राजग अपने बूते बहुमत नहीं ला पाए. अगर जरूरत हुई तो राजग जरूरी संख्या (272) जुटाने के लिये चुनाव बाद गठबंधन कर सकता है. सुषमा ने कहा पार्टी को अटल बिहारी वाजपेयी की कमी बुरी तरह खल रही है. पिछले आम चुनाव तक कहा जाता था कि वाजपेयी और आडवाणी की जोड़ी कभी नहीं टूटेगी. व्यक्तिगत तौर पर अटलजी की कमी आडवाणी से ज्यादा कोई नहीं महसूस कर रहा होगा.

विदेश राज्यमंत्री और वरिष्ठ कांग्रेसी नेता आनंद शर्मा ने कहा, फिलहाल हम 440 सीटों पर चुनाव लड़ रहे हैं. आठ राज्यों में वहां की पार्टियों से समझौता कर मैदान में उतरे हैं. अगर सरकार बनाने के लिये कुछ सीटें कम पड़ीं तो हमने चुनाव बाद गठबंधन का विकल्प भी खुला रखा है. शर्मा ने कहा, कांगेस 2004 की 145 सीटों से ज्यादा सीटें जीतेगी. हालांकि वे यह नहीं बता सके कि पार्टी कितनी सीटों पर जीतेगी. उन्होंने कहा चुनाव बाद सब अंकगणित का खेल होगा. अगर हम बहुमत से कुछ सीटें कम रहे तो धर्मनिरपेक्ष साथी तलाशेंगे.

शेष पेज 16 पर .....

16 मई के बाद शह और मात तय करेंगे पंवार

वे तीन में भी हैं और तेरह में भी, बल्कि तीन से लेकर तेरह तक सभी में हैं। कृषिमंत्री शरदचंद्र गोविंदराव पवार के राजनैतिक जनाधार का भूगोल भले ही महाराष्ट्र के कुछ जिलों में सिमटा हुआ हो, लेकिन उनकी गिनती उन लोगों में तो है ही जो 16 मई के बाद की राजनैतिक बिसात में शह-मात तय कर सकते हैं। वे बाकायदा कैबिनेट मंत्री पद के साथ संप्रग के मोर्चे में तो हैं ही, तीसरे मोर्चे से भी हाथ मिलाने जा रहे हैं। बाकी एनडीए के घटक शिव सेना के प्रमुख उनकी तारीफ में कुछ ही दिन पहले काफी कसीदे काढ़ चुके हैं।

कहा जाता है कि न तो भाजपा को उनसे कोई आपत्ति है और न वाम दलों को। राजनैतिक अस्पृश्यता के इस युग में शरद पवार ही शायद सर्वस्वीकार्य हैं। बात को अगर राजनीति से अलग ले जाएं तो वे क्रिकेट में भी हैं, कबड्डी में भी, और खो-खो में भी। वे इन सबके संघों के सर्वेसर्वा हैं। लेकिन वे यह भी जानते हैं कि राजनीति कबड्डी नहीं है, इसलिए न तो वे किसी एक पाले में हैं और न किसी के खिलाफ ताल ठोंक रहे हैं। आम चुनाव में उनकी राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी का प्रदर्शन अगर बहुत अच्छा भी रहा तो भी उनके पास एक दर्जन के आस-पास सीटें ही होंगी। महज इतनी सी ही ताकत के भरोसे अपनी दावेदारी ठोंकने के लिए जो आत्मविश्वास, जुगाड़ और क्षमता चाहिए, शरद पवार उसके धनी हैं। बाकी हर मोर्चे में अपने पांव पहुंचा कर उन्होंने चुनाव बाद के अपने इरादों की भूमिका लिख दी है। कांग्रेस ने इस पर अपनी खिन्नता भी जाहिर कर दी है, लेकिन इस खिन्नता का भी एक औपचारिकता से बड़ा कोई अर्थ नहीं है। चीजें अगर पवार के नहीं कांग्रेस के पक्ष में जाती भी हैं तो भी चुनाव के पहले और बाद में दोनों ही मौकों पर कांग्रेस को पवार की जरूरत पड़ेगी ही। यह दोनों को ही अच्छी तरह से पता है। फिर यह फैसला तो कांग्रेस का ही है कि वह राष्ट्रव्यापी नहीं प्रादेशिक आधार पर चुनावी गठजोड़ बनाएगी। लोकतंत्र में अगर बहुमत के तर्क होते हैं तो त्रिशंकु नतीजों के अपने कुतर्क होते हैं। फिलहाल देश की राजनीति इन्हीं कुतर्कों के आस-पास बुनी जा रही है। उन्हें देखें तो पवार के दांव बहुत हवाई भी नहीं लगते।